5. [redacted].साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समाए।
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाए॥

अर्थ—हे प्रभु! मुझे इतना दीजिए—जितने में मेरे परिवार के सब सदस्यों का निर्वाह हो जाए। वो या मैं भूखे न रहें। ना ही हमारे यहां आने वाला अतिथि या साधु/संत आदि को भूखा या रिक्त लौटना पड़े। (इससे अधिक होना ही समस्याओं की जड़ है। इससे अधिक से ही बचना है।)

6. [redacted].माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥

शब्दार्थ—माला हाथ में फेरते फेरते युग व्यतीत हो गया, किन्तु मन का फेर न गया (मन भटकता ही रहा।) हाथ में 'मनके' (माला के दाने) को छोड़ कर मन का 'मनका' (दाना) फेर-(तब सफलता प्राप्त होगी। यानि मात्र कर्मकाण्ड में मत उलझ अपने मन को भी क्रिया के साथ 'इन्वॉल्व' कर। मन को रमा।)

7. [redacted]-[redacted]. कैसा भी सामर्थ्य हो, बिन उद्यम दुख पाय।
निकट असन बिन कर चले, कैसे मुख में जाय॥

(कितना भी सामर्थ्यवान व्यक्ति हो, बिना परिश्रम किए असफल ही रहता है। भोजन की थाली निकट होते हुए भी बिना हाथ चलाए भोजन मुख में नहीं जा सकता।)

8. [redacted].पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहाड़।
ताते तो चक्की भली, पीसि खाए संसार॥

शब्दार्थ—यदि पत्थर की पूजा करने से (मूर्त पूजा के लिए कहते हैं) ही हरि मिल जाते हैं, तो मैं (पत्थर के स्थान पर पूरे) पहाड़ की पूजा करूं। (किन्तु ऐसा नहीं होता) अतः पत्थर को ही पूजना है तो चक्की के पाटों को पूजना ज्यादा अच्छा है (ये भी पत्थर ही होते हैं)—जिनका पीसा गया (अन्न) सारा संसार खाता है। (मानवोपयोगी है)।